ISSN : 2582-9092

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तराष्ट्रिय उपक्रम)

A Reviewed/Refereed Research Journal

जुलाई-सितम्बर 2022 || त्रैमासिक | वर्ष 3 |अंक 10| इन्दौर

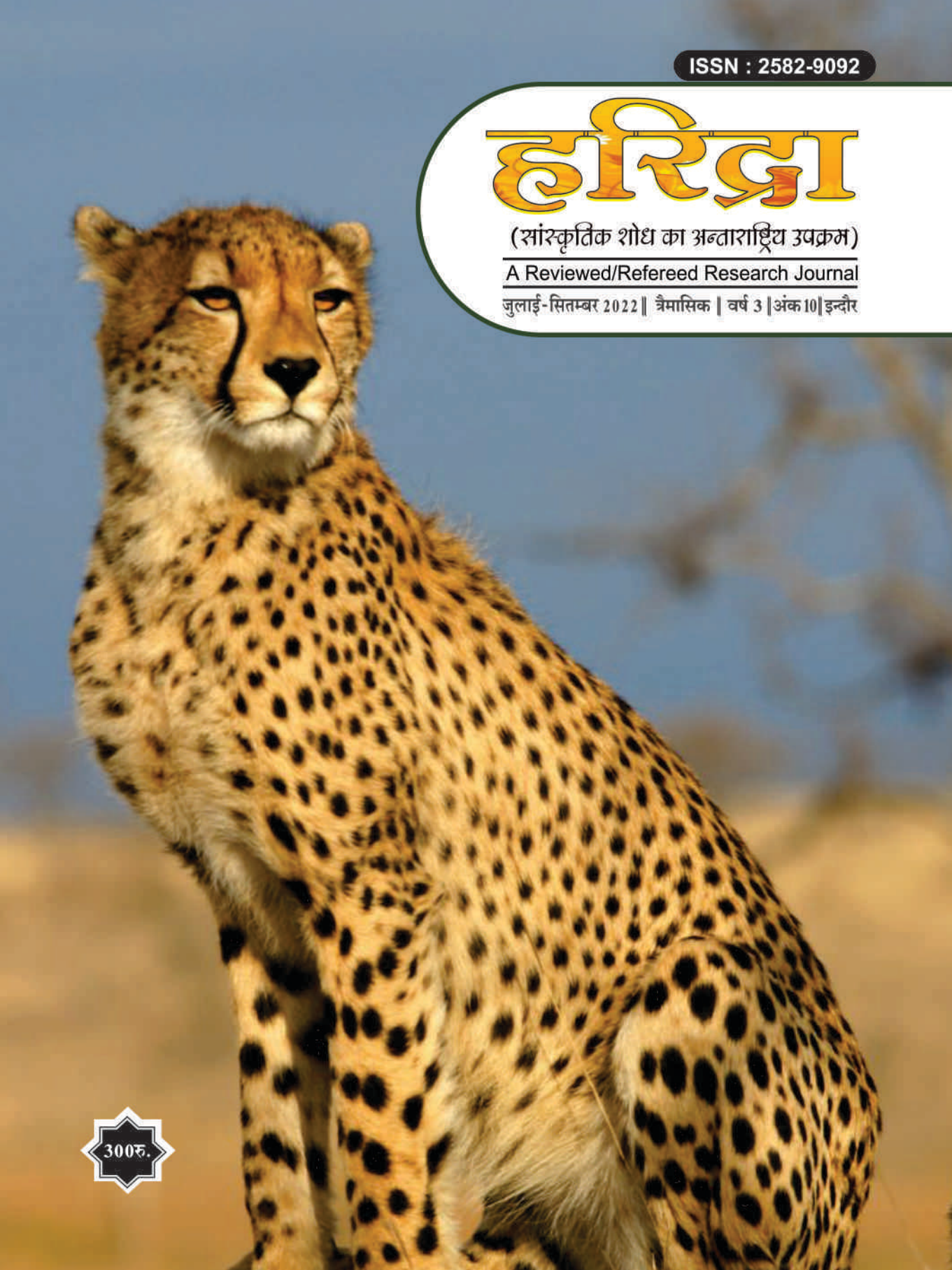

300रु.

वे गणेश जी द्वारा ही दत्त थे

– डॉ. मंगल मिश्र

गणेश अथर्व शीर्ष में भगवान गणेश को ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, इंद्र, अग्नि, वायु, सूर्य, चंद्रमा और तीनों शक्तियों का सम्मिलित स्वरूप कहा गया है।

जब परिवार पर गणेश जी की कृपा होती है, तभी गणेशदत्त त्रिपाठी जैसे ज्ञान– रत्न का जन्म होता है। अत्यंत संस्कारी और धर्मानुरागी परिवार में जन्मे संस्कृत और दर्शनों के विद्वान महामहोपाध्याय षड्दर्शनतीर्थ पंडित नारायणदत्त जी त्रिपाठी के सुपुत्र, साहित्य महोपाध्याय प्रो. गणेशदत्तजी त्रिपाठी, विद्या और ज्ञान के मामले में मानो गणेश जी के ही प्रत्यक्ष आशीर्वाद स्परूप थे। वे आशुतोष भी थे और परशुराम भी। वे ज्ञानमूर्ति थे और तपमूर्ति भी। वे स्वाध्याय प्रेमी थे और अप्रतिम शिक्षक भी। वे असाधारण लेखक थे और अद्वितीय वक्ता भी। वे स्पष्टवादी और प्रचंड स्वाभिमानी थे। साथ ही अत्यंत विनम्र और मृदुभाषी भी। परमात्मा ने मानो आदर्श विद्वान के सभी गुण कूट–कूट कर उनमें भरे थे।

आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. हिन्दी साहित्य करने के पश्चात उन्होंने साहित्य रत्न और व्याकरणतीर्थ जैसे सम्मान अर्जित किए। न्याय, सांख्य और वेदांत के अध्ययन के प्रति उनकी आनुवंशिक रूचि थी और उसमें भी वे निष्णात हुए। सूरत, नागपुर, मुंबई, ग्वालियर, रायगढ़, रतलाम, जावरा, नीमच, खरगोन और इंदौर के विभिन्न महाविद्यालयों में व हिन्दी के अत्यंत लोकप्रिय प्राध्यापक रहे। देश के अनेक विश्वविद्यालयों में वे 40 वर्ष से अधिक समय तक विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं देते रहे। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में तो शायद ही कोई ऐसा कार्य रहा होगा, जिसमें उनकी उपस्थिति रेखांकित नहीं हुई हो। हिन्दी के विद्वान होते हुए भी वे आयुर्वेद, चिकित्सा, समाजविज्ञान, शिक्षाविज्ञान, जीवन विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसाय प्रबंध संकायों से विद्या परिषद में निर्वाचित हुए। हिन्दी साहित्यकारों की अनेक संस्थाओं में उन्होंने महत्वपूर्ण पदों को पूरी जिम्मेदारी के साथ वहन किया।

देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में उनके नियमित लेख और राजनैतिक विश्लेषण लगातार प्रकाशित हुए।

वे वैदिक और सनातन संस्कृति के पुरोधा थे और उन्होने सभी अवसरवादियों को जमकर फटकार लगाई। देश के 50 से अधिक विश्वविद्यालयों में असंख्य व्याख्यान देने वाले त्रिपाठी जी अनेक पुस्तकों के लेखक रहे, जिन्होंने 50 से अधिक विद्यार्थियों को विद्या–वाचस्पति उपाधि हेतु मार्गदर्शन भी दिया।

वे अद्वितीय वक्ता थे और उन्होंने अनेक वाद–विवाद स्पर्धाओं मे वक्ताओं को प्रशिक्षित किया। अपने असाधारण ज्ञान के कारण वे किसी भी विषय पर तत्काल पक्ष और विपक्ष में विद्यार्थियों को बोलना सिखा देते थे। उनका लेखन मानो साक्षात् सरस्वती की कृपा का प्रतिफल था। असंख्य साहित्यकारों की रचनाओं का उन्होंने गंभीर अध्ययन किया था, लेकिन महाकवि भूषण से उन्हें विशेष स्नेह था। अनेक अवसरों पर उन्होंने भूषण की कविताएं प्रतीक बनाकर छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का ऐसा चित्रण किया कि श्रोता लगातार ताली बजाने पर विवश हो जाते थे और उन्हें माईक से हटने की अनुमति नहीं मिलती थी। उनकी प्रस्तुती इतनी कलात्मक होती कि श्रोता उनकी रस धारा में बह जाते थे।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा, अद्वितीय लेखन और श्रेष्ठतम वाणी कौशल के उपरांत भी वे विद्यार्थियों के लिए सदैव सुलभ बने रहे। कमजोर विद्यार्थियों को उनके स्तर पर उतरकर पढ़ाना, जटिलतम साहित्यिक रचनाओं को सरलतम तरीके से समझाना, उनकी विशेषताएं थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी गणेशदत्त जी ने पूरा जीवन सरल और विनम्र रहकर जिया। सच को सच कहने का उनका साहस अनुकरणीय था। वे कभी किसी से भयभीत नहीं हुए, लेकिन उन्होंने न तो कभी शब्दों की मर्यादा छोड़ी, न कभी विनम्रता का परित्याग किया।

उनकी असहमति भी सरलता और दृढ़ता के साथ होती थी। पर उसमें अहंकार का लेशमात्र भी नहीं होता था। ऐसे अद्वितीय लेखक, कवि, विचारक और अप्रतिम शिक्षक पूज्य त्रिपाठी जी के श्रीचरणों में सादर नमन।

– प्राचार्य, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या
वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

ISSN : 2582-9092

त्रैमासिक ‖ वर्ष: 3 ‖ अंक:10 ‖ इन्दौर ‖ जुलाई-सितम्बर 2022 ‖ आषाढ़-भाद्रपद ‖ विक्रम संवत् 2079

वर्षा अंक

मुख्य सम्पादक

अभिजीत त्रिपाठी

सम्पादक

डॉ. विकास दवे

मार्गदर्शक

महामहोपाध्याय पण्डितराज आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

(पूर्व कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक वि.वि., उज्जैन)

स्वर्ण पदक- एम.ए. संस्कृत/कला संकाय/एम.ए.हिन्दी, राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित- कालिदास अलंकरण पुरस्कार राष्ट्रपति पुरस्कार/साहित्य अकादमी पुरस्कार/ अखिल भारतीय सर्वभाषा पुरस्कार/कालिदास संस्कृतवती राष्ट्रीय पुरस्कार एवं महामहोपाध्याय, पण्डितराज, वैभवभूषण उपाधियों से अलंकृत

सम्पादक मण्डल

डॉ. दीपक शर्मा

(कुलपति, कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत व पुरातन अध्ययन वि.वि., नलबारी आसाम)

E-mail : kbvsasun@rediffmail.com

डॉ. राजेश लाल मेहरा

(पूर्व प्रा. शा.कला एवं विज्ञान महा., रतलाम)

E-mail : profrajeshmehra441@gmail.com

प्रो. योशीफुमी मिज़ुनो

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग

(टोकियो युनिवर्सिटी ऑफ फोरेन स्टडीज़, टोकियो जापान)

E-mail : mizunoyo@tufs.ac.jp

प्रो. गणपति रामनाथ

(रेनेसेलर पोलीटेक्नीक इंस्टीट्यूट, ट्रॉय, न्यूयार्क, अमेरिका)

E-mail : ramanath@rpi.edu

डॉ. मंगल मिश्र

प्राचार्य, क्लॉथ मार्केट वाणिज्य महा. बड़ा गणपति, इन्दौर

E-mail : scmkvm.indore.mp@gmail.com

डॉ. अरूणा कुसुमाकर

(प्राचार्य शा. संस्कृत महाविद्यालय, रामबाग, इन्दौर)

E-mail : sanskritcollege.indore@gmail.com

सम्पर्क

महोपाध्याय मं. गणेशदत्त त्रिपाठी शैक्षणिक, धार्मिक, पारमार्थिक न्यास

३१८, प्रोफेसर कॉलोनी, सपना-संगीता रोड़, इन्दौर (म.प्र.) ई-मेल : editor@haridrajournal.com

www.haridrajournal.com

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

रिव्यूअर बोर्ड

ISSN : 2582-9092

संस्कृत	- डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी (पूर्व कुलपति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली)
संस्कृत	- डॉ. नरेन्द्र कुमार एल. पण्ड्या (प्राचार्य श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, संचालित कॉलेज, वेरावल, गुजरात)
संस्कृत	- डॉ. भगतवशरण शुक्ला (विभागाध्यक्ष व्याकरण विभाग, फेकल्टी संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान, बनास हिन्दू विश्वविद्यालय)
संस्कृत	- डॉ. नीलाभ तिवारी (प्रा. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल)
हिन्दी	- डॉ. शिवकुमार शुक्ला (प्रा. हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज)
हिन्दी	- डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, निर्भयसिंह पटेल शा. विज्ञान महाविद्यालय, ए.बी.रोड़, इन्दौर)
हिन्दी	- डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी.के. बिड़ला कॉलेज ऑफ आर्ट्स-सांईस एण्ड कॉमर्स, मुम्बई)
हिन्दी	- डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे (एच.ओ.डी., हिन्दी विभाग, महाराजा रंजीत सिंह कॉलेज, इन्दौर)
हिन्दी	- डॉ. कविता भट्ट (संकाय विकास केन्द्र, हे.न.ब. गड़वाल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, उत्तराखण्ड)
हिन्दी	- डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव (पूर्व प्रा. दे.अ.वि.वि. इन्दौर)
हिन्दी	- डॉ. मनोज पाण्डेय (प्रा. नागपुर वि.वि.)
हिन्दी	- डॉ. नरेन्द्र मिश्र (प्रा. जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर)
आयुर्वेद	- डॉ. महेश व्यास (डीन.(पीएच-डी.) अ.भा. आयुर्वेद संस्थान, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार)
आयुर्वेद	- डॉ. सोमेन्द्र मिश्र (अष्टांग आयुर्वेदिक महा. इन्दौर)
आयुर्वेद	- डॉ. लोकेश जोशी (प्रांत सचिव आरोग्य भारती, इन्दौर)
राजनीति विज्ञान	- डॉ. अश्विनी शर्मा (प्रा. शा. अटल बिहारी वाजपेयी महा. इन्दौर)
राजनीति विज्ञान	- डॉ. उषा सोलंकी (प्राचार्य शा.महा. रायसेन)
अंग्रेजी	- डॉ. प्रीति भट्ट (निर्भयसिंह पटेल शा. विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर)
समाज विज्ञान	- डॉ. कविता मंगलम् (प्रा. कालिदास कन्या महा. उज्जैन)
योग	- डॉ. हेमंत शर्मा (प्रा. शा. अटल बिहारी बाजपेयी महा., इन्दौर)
योग	- डॉ. संजय लोंढे (योगाचार्य, इन्दौर)
इतिहास	- डॉ. भावना व्यास (प्रा. एल्युमिनी नेशनल म्यूजियम इंस्टिट्यूट, वृंदावन शोध संस्थान)
इतिहास	- डॉ. अनिल पुरोहित (प्रा. महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर)
नृत्य	- डॉ. सुचित्रा हरमलकर (प्रा. दे.अ.वि.वि. इन्दौर)
नृत्य	- डॉ. विजया शर्मा (एच.ओ.डी., डिपार्टमेंट ऑफ डांस, गवर्नमेंट एम.एल.बी. कॉलेज, भोपाल)
संगीत	- श्री विजय सप्रे (ख्यात शास्त्रीय संगीतज्ञ (एम.ए. संगीत), भोपाल)
चित्रकला	- डॉ. लक्ष्मीनारायण भावसार (से.नि. एच.ओ.डी., ड्रॉईंग एण्ड पेंटिंग, भोपाल)
कृषि	- डॉ. एस.एन. उपाध्याय (निदेशक विस्तार सेवाएं, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि वि.वि.ग्वालियर)
कृषि	- डॉ. के. एस. बांगर (प्रिंसिपल साईंट्स्ट, एस.ए.एस. प्रोजेक्ट, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर)
पत्रकारिता	- श्री श्रवण गर्ग (वरिष्ठ पत्रकार)
स्थापत्य कला	- डॉ. विशाल यार्डी (डायरेक्टर आर्किटेक्चर - श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर)
स्थापत्य कला	- श्री राजकुमार वासवानी (डायरेक्टर - एल.एस.वासवानी आर्किटेक्टस, इन्दौर)
मैनेजमेंट	- श्री अतुल चतुर्वेदी (चेयरमेन - रेनुका शुगर प्रा.लि., सीनियर एडवाइजर अडानी विलमार)

हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

सम्पादकीय...

चीता शब्द संस्कृत मूल का शब्द है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत शब्द चित्रकायः से हुई है। जिसका अर्थ होता है बहुरंगी शरीर वाला। चीते का उल्लेख वेदों और पुराणों में भी मिलता है।

सितम्बर 2022 का महीना भारत वर्ष के लिए वन्यजीवन के परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक था। 17 सितम्बर 2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के अवतरण दिवस पर कुनो राष्ट्रीय उद्यान में चीते 1952 के बाद फिर गुर्राये।

प्राणी के प्राणों की रक्षा प्राण–प्रण से कि जानी चाहिए यह हमारी प्राचीन सनातन भारतीय संस्कृती है। पेड़, पौधे, फूल, फल, लताएँ, पशु, पक्षी यह सब इस भूमंडल कि विरासत है। यह सब प्राकृतिक ऋतु चक्र से बंधे होते है व हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग है। चाहे साहित्य हो या चित्रकला या कुछ और सब में इसका प्राकृतिक चित्रण भली भांति मिलता है। आदिकाल के चित्र गाय, शेर, चीते व अन्य पशुओं की मौजूदगी के बगैर निरर्थक है। वैसे ही कालीदास का साहित्य और पेड़, पौधों, लताओं, पशुओं की मौजूदगी के बिना नीरस लगेगा। मयूर का नृत्य, हिरण से सुंदर नयन की उपमा, जल जीवन में मछली की काया यह सब साहित्य में मनोरम बताए जाते है।

वन्य जीवन हमारी विरासत है और उनकी सुरक्षा व संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है। हमने पहले उनका मोल नहीं समझा तो अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो गई व कई विलुप्ती की कगार पर पहुंच गई। इसका दुष्प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है और पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है। वन्य प्राणियों के विलुप्त होने का प्रतिकुल असर निःसंदेह मानव जाति पर भी पड़ता है।

भारत में वन्य जीवन की सुरक्षा के लिए दो प्रकार के निवास स्थान का निर्माण किया गया है। पशु विहार व राष्ट्रीय उद्यान। पशु विहार में पक्षियों और पशुओं की सुरक्षा व्यवस्था है और राष्ट्रीय उद्यानों में सम्पूर्ण परिस्थिति की वन्य प्राणियों के लिए सेन्ट्ल जू अथॉरिटी का भी गठन किया गया है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय जलवायु परिवर्तन जैव विविधता तथा वन्य जीव संरक्षण आदी सम्बन्धी अंतराष्ट्रीय संयोजनों की मुख्य एजेंसी है।

मध्यप्रदेश का कुनो राष्ट्रीय उद्यान श्योपूर में स्थित है और इस ऐतिहासिक प्रयास का भागीदार है, क्योंकि यहां की जलवायु चीतों के लिए उत्तम है। चीतों के आने की आहट से पूरा इलाका प्रगती के पथ पर चलेगा। इसका मुख्य कारण पर्यटन में होने वाली बढ़ोतरी होगी।

चीतों का पुर्नस्थापना बड़ा ही ऐतिहासिक प्रयोजन है। यह दर्शाता है कि हम प्रकृति पर्यावरण के प्रति सजग व जिम्मेदार है व अपनी पुरानी गलतियों से सबक भी ले रहे है।

माननीय प्रधानमंत्री की इस दुर्लभ पहल की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। अफ्रिका से चीते लाकर वापस हमारे देश में बसाना बहुत ही विलक्षण और उत्साहित करने वाला प्रयास है। इस भागीरथी प्रयास के लिए हरिद्रा की ओर से साधुवाद।

– अभिजीत त्रिपाठी

हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

।। अनुक्रमणिका ।।

क्रमांक	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	अग्निपुराणानुसार धनुर्वेद (धनुर्विद्या) की मीमांसा	जयसिंह गोहिल	3–12
2.	पातंजल योगसूत्र में "नियम"	डॉ. कश्यप एम. त्रिवेदी	13–20
3.	ऋतुसंहार का लालित्य एवं परवर्ती काव्यों पर प्रभाव : एक अध्ययन	रवीना (शोधछात्रा) प्रो. सूर्यनारायण गौतम	21–25
4.	निर्वचनशास्त्रे दैव्यापदः प्रबन्धनम्	आचार्य डॉ. रामकिशोर मिश्र (प्राध्यापक) नीलेश कुमार तिवारी (शोधछात्र)	26–31
5.	पाणिनीयसूत्रव्याख्याने ऐतिहासिकतथ्यानि : एकमनुशीलनम्	**Dr. Dharmendra Das**	**32-38**
6.	**Artificial Intelligence in legal profession: Pros, Cons and Challenges**	**Niti Nipuna Saxena**	**39-45**
7.	**Importance of girl's education for Sustainable Development**	**Jyoti Panchal Mistri**	**46-49**
8.	**The Need of Suggestive Power of the Word: A Nya¯ya Overview.**	**Dr. Pankaj Jaje**	**50-56**

ISSN : 2582-9092

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रिय उपक्रम)

आग्रह लेखकों से :–

- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक, मोबाइल नं. ई–मेल एड्रेस अपेक्षित है।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50– 100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे रहना चाहिए।
- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये।
- लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट– पेज मेकर की फाइल, पी डी एफ . फाइल , स्कैन मैटर आदि में शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी / संस्कृत लिपि में कृतिदेव (फॉन्ट साइज 14) में भेजा जाना चाहिए, और अंग्रेजी में फॉन्ट एरियल (फॉन्ट साइज 14) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।
- शोध पत्र ई–मेल द्वारा भेजें– haridra5@outlook.com
- शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादक कार्यालय द्वारा लेखक को ई–मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।
- रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में रिसर्च जनरल हरिद्रा के सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जनरल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए हरिद्रा रिसर्च जनरल का सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, इन्दौर जिला इन्दौर (म.प्र.) रहेगा।

Request to Authors

General: This is Multilingual Research Journal hence research papers can be sent in Hindi, Sanskrit or English. Manuscript of research paper: It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract, Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi/Sanskrit manuscripts must be in Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies. soft copy of manuscripts should be in Microsoft word Format font Arial and font size 14. Authors are solely responsible for the (actual accuracy of their contribution)

References : References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper.

Review System: Every research paper will be reviewed by members of reviewer Board. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English, sanskrit or Hindi sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

RNI NO. MPMUL/2020/79421

ISSN : 2582-9092

ध्येय पथ के निर्माता...

महोपाध्याय आचार्य गणेशदत्त त्रिपाठी

(२६ नवम्बर, १९३०-१ अप्रैल २०१२)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अभिजीत त्रिपाठी द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स प्लाट नं.7 ग्राम भंवरासला सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं 318, प्रोफेसर कॉलोनी, टॉवर चौराहा सपना संगीता रोड, इन्दौर 452001 से प्रकाशित। संपादक- अभिजीत त्रिपाठी 9755906360